

**Vor mir  
meine Welt  
hinter dem Vorhang  
I ihr Schatten**

|                  |    |
|------------------|----|
| Paradies .....   | 12 |
| Messer .....     | 14 |
| Feige Sau .....  | 16 |
| Fantasie .....   | 20 |
| Wasserloch ..... | 22 |

**Raue  
Schale  
Rauer  
2 Kern**

|                         |    |
|-------------------------|----|
| Holzweg.....            | 28 |
| Streit.....             | 30 |
| Feind.....              | 32 |
| Komm.....               | 34 |
| Wo Geld.....            | 37 |
| Lenken.....             | 38 |
| Psychohaie.....         | 40 |
| Wald.....               | 42 |
| Tausendmal.....         | 44 |
| Balkon.....             | 48 |
| Was uns trennt ist..... | 50 |
| Rost.....               | 52 |
| Dich sogar freuen.....  | 54 |
| Schwanzgesteuerte.....  | 56 |
| Alle zahlen.....        | 59 |
| Notausgang.....         | 60 |
| Scheibe.....            | 71 |

### 3 Angst vor den Anderen ohne Angst

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| Sebastian .....           | 74  |
| Grenzen .....             | 79  |
| Oh du mein Führer .....   | 80  |
| Angst gemacht .....       | 84  |
| Und dann .....            | 87  |
| LINKE                     |     |
| MENSCHEN                  |     |
| RECHTE .....              | 88  |
| Verwählt .....            | 90  |
| Hitlerparade .....        | 92  |
| 2. September 1945 .....   | 93  |
| ICH .....                 | 97  |
| Gattung .....             | 98  |
| In Niederösterreich ..... | 100 |
| Hinterzimmer .....        | 101 |
| Wie damals .....          | 102 |
| Anfang .....              | 104 |
| Hunger .....              | 106 |
| Aufbau .....              | 108 |
| Wer lebt jetzt .....      | 111 |
| Der Keller .....          | 115 |

**4**      **So sehr wütend  
wie ich bin  
muss ich  
sehr sehr  
traurig**

|                               |     |
|-------------------------------|-----|
| Es ist .....                  | 119 |
| Spieglein .....               | 120 |
| Geworden .....                | 122 |
| immer und immer .....         | 125 |
| Traumatische Erlebnisse ..... | 126 |
| Wenn Mann .....               | 128 |
| Ist der Tag .....             | 130 |
| Gekommen .....                | 132 |
| Meiner Therapeutin .....      | 134 |
| Ich beisse .....              | 137 |
| Kränken .....                 | 138 |
| Achtung auf meine Seele ..... | 140 |
| Sterbens Lust .....           | 142 |
| Du Alles .....                | 144 |
| Dunkelheit .....              | 148 |
| Dämon .....                   | 151 |
| Wie manche Leute .....        | 155 |
| Foto .....                    | 157 |
| Das Meine .....               | 160 |
| Hineinblick .....             | 162 |
| Wenn .....                    | 164 |
| Eines Tages                   |     |
| eines Nachts .....            | 165 |
| Mensch .....                  | 166 |
| Ergebnis .....                | 169 |
| Sterben .....                 | 170 |

|                                     |     |
|-------------------------------------|-----|
| Ergebe mich .....                   | 173 |
| Sterbebettfaktor .....              | 174 |
| Zünder .....                        | 177 |
| Nicht einmal mehr ein Vorwurf ..... | 181 |
| Viel einfacher .....                | 185 |

## **Der Mensch ist des Menschen Mensch**

# **5**

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| WIE FINDE ICH .....        | 188 |
| Über .....                 | 189 |
| Mensch, du Säugetier ..... | 192 |
| Apfel .....                | 193 |
| Verlogenheiten .....       | 194 |
| Dorf .....                 | 195 |
| Verflüchtungen .....       | 196 |
| Oaschkoid .....            | 198 |
| Diese .....                | 202 |
| Auslöschung .....          | 203 |
| Irgendetwas .....          | 204 |
| Keller Dreck .....         | 206 |
| Und auf einmal .....       | 207 |
| Nur nicht .....            | 208 |
| Über die Wahrheit .....    | 210 |
| Lange noch .....           | 214 |
| Wenn der Mensch .....      | 216 |
| Eine Schutzhülle .....     | 217 |

**6**      **Nichts  
ist so schwach  
wie gespielte  
Stärke**

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| Ich war du warst ich..... | 220 |
| Sinnlos.....              | 224 |
| Moral .....               | 227 |

**7**      **Der Moment  
der Umkehr fühlt sich  
wie Stillstand an**

|                              |         |
|------------------------------|---------|
| Babsi.....                   | 230     |
| Mut und Feigheit.....        | 232     |
| Wie beim ersten Mal .....    | 234     |
| Frag mich endlich .....      | 239     |
| Du.....                      | 242     |
| Unsere Zeit .....            | 245     |
| Liebesanfälle .....          | 248     |
| Ohne .....                   | 249     |
| Ich glaube.....              | 251     |
| <br>Thomas Andreas Beck..... | <br>252 |
| Dank.....                    | 254     |
| Impressum.....               | 255     |